एक आखिरी इच्छा

सावित्री और सत्यवान

एक आखिरी इच्छा

सावित्री और सत्यवान

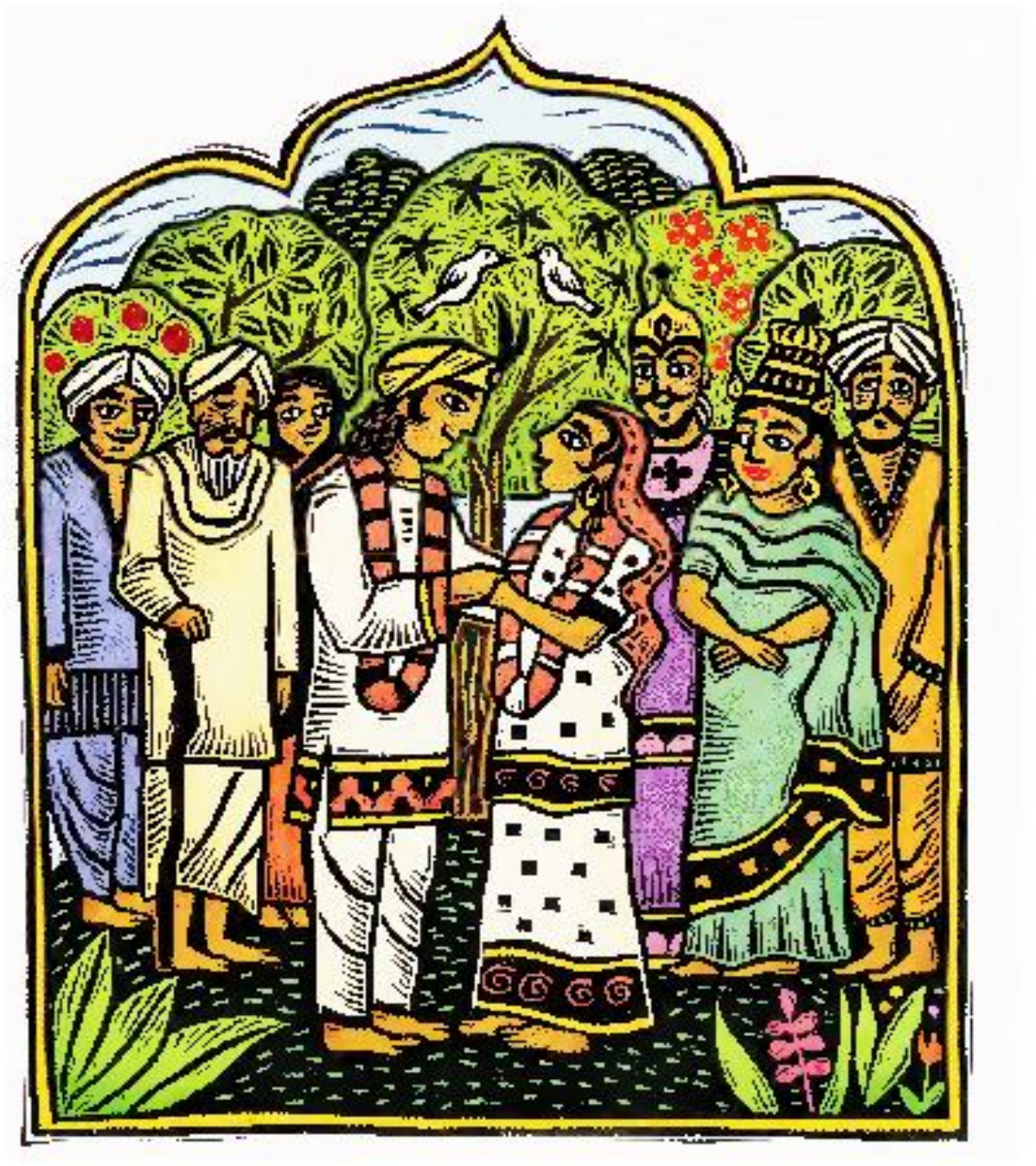

राजकुमारी अपने होने वाले पति से बहुत प्यार करती है. तभी उसको अपने भावी पति के बारे में एक भयानक रहस्य पता चलता है. इस खबर के बावजूद वो उससे शादी करती है. उसकी भक्ति और दृढ़ता की परीक्षा तब होती है जब मृत्यु देवता यम उसे एक इच्छा प्रदान करते हैं, जिसका उसे पूरी बुद्धिमानी से उपयोग करना है. यह भारतीय कहानी - प्रेम, भक्ति और बहादुरी की शक्ति का जश्न मनाती है.

प्राचीन भारत में एक महान राजा थे. राजा अहिपति और उनकी रानी दोनों, प्रजा के प्रिय थे. उनकी खुशी अधूरी थी क्योंकि उनके कोई संतान नहीं थी.

देवी लक्ष्मी ने उन पर दया की. देवी ने सपने में राजा से कहा कि एक साल के भीतर उनके घर में एक बच्चा होगा. उसके बाद ही सुंदर बच्ची सावित्री का जन्म हुआ.

सावित्री का बचपना बहुत अच्छा बीता. अठारह वर्ष की आयु में, वो प्रकृति के बीच रहने वालों से सीखने के लिए जंगल में चली गई. लौटने के बाद, उसने अपने पिता से आकर बात की.

"प्यारे पिताजी, मैं जंगल में युमत्सेना नाम के एक राजा से मिली. एक दुष्ट राजा ने उन्हें राज्य से निष्कासित कर दिया और उनका सिंहासन हड़प लिया. फिर उसने उन्हें गरीब और अँधा बनाकर जंगल में छोड़ दिया. अब राजा अपने बेटे सत्यवान के साथ जंगल में रहते हैं. पिताजी, मुझे सत्यवान से प्रेम हो गया है."

राजा को बेटी की बात अच्छी भी लगी पर दुर्भाग्यपूर्ण भी. "सावित्री," उन्होंने कहा, "मुझे खुशी है कि तुमने इतना योग्य पति चुना है. पर इससे पहले कि मैं अपना आशीर्वाद दूँ, मैं अपने हितैशियों से सलाह-मशविरा करूंगा."

फिर राजा ने अपने मुख्य परामर्शदाता को बुलाकर पूछा कि क्या वो विवाह ठीक रहेगा.

"महान राजा और सावित्री," परामर्शदाता ने उत्तर दिया. "मैं बड़े खेद के साथ आपको बताना चाहता हूँ कि कल रात भगवान शिव मेरे सपने में आए थे. उन्होंने मुझे बताया कि सत्यवान केवल एक ही वर्ष और जीवित रहेगा. सावित्री, यदि आप सत्यवान से शादी करेंगी तो आपको बड़े दुःख झेलने पड़ेंगे."

उसके बाद राजा ने सावित्री की ओर रुख करके कहा. "प्रिय बेटी, मैं चाहता हूं कि तुम एक खुशहाल जीवन जियो. विधवा होने के लिए तुम अभी बहुत छोटी हो. तुम अपने लिए कोई दूसरा स्वस्थ्य वर क्यों नहीं खोजतीं?"

"पिताजी," सावित्री ने उत्तर दिया, "मेरे लिए यह मायने नहीं रखता कि हमारे पास कितना समय होगा. अपने प्रियतम के साथ एक घंटे की खुशी भी मेरे लिए किसी दूसरे आदमी के साथ जीवन भर की खुशी की तुलना में अधिक मूल्यवान होगी. आप बस एक वादा करें कि आप सत्यवान की सच्चाई किसी को बताएंगे नहीं."

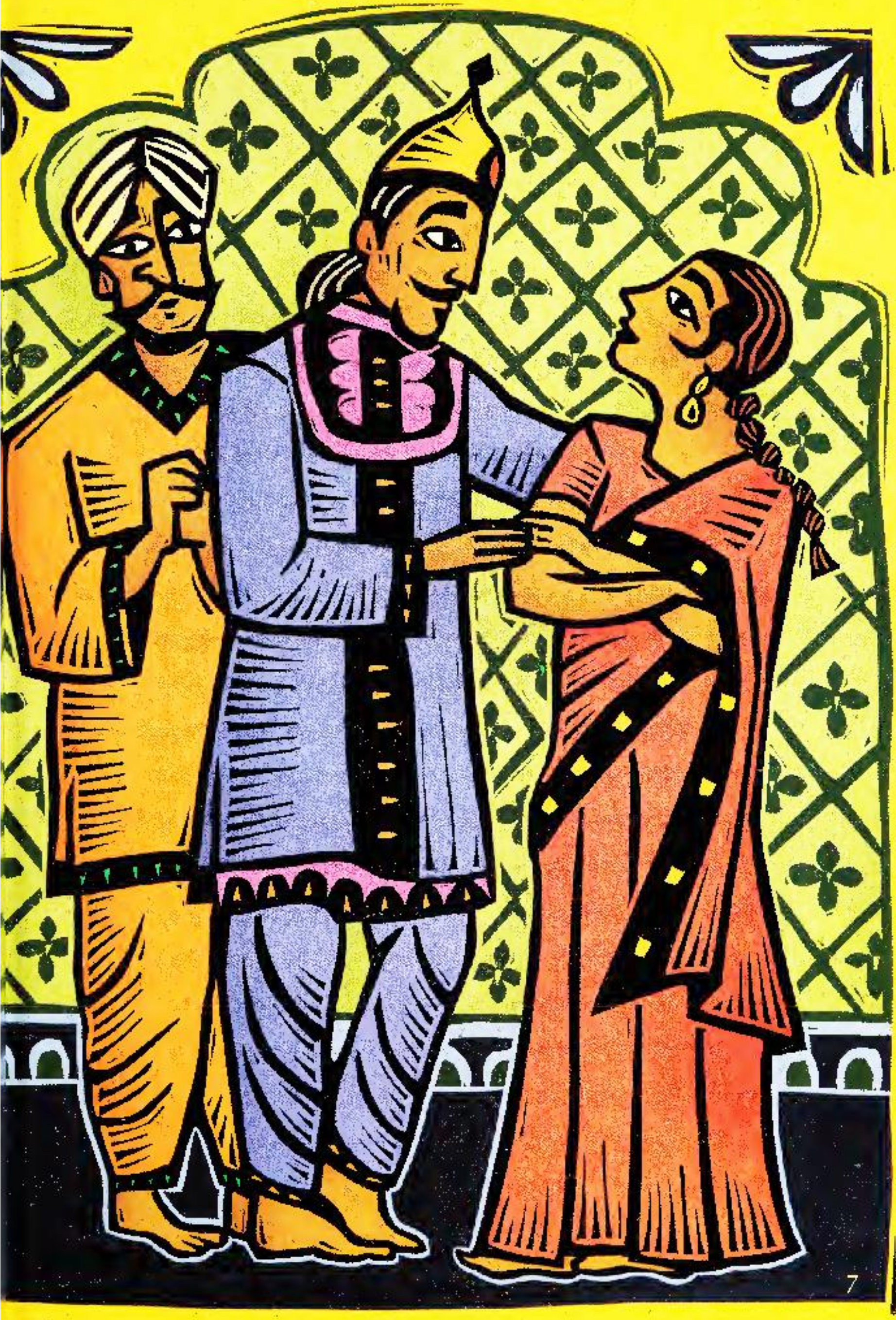

बेटी की खुशी को राजा भला इनकार कैसे करते?
फिर शादी उसी जंगल में आयोजित हुई जहाँ दंपत्ति सबसे पहले मिले थे. पर दंपत्ति के ख़ुशी के दिन जल्द ही बीत गए.

जल्द ही शादी के बाद के साल में सिर्फ चार दिन ही बाकी बचे. सावित्री ने देवताओं से मदद मांगने का फैसला किया. वो जंगल में गई और उसने घोर प्रार्थना की. कई घंटे बीत गए. सत्यवान ने सावित्री को जंगल में खड़े पाया और उसने उसका कारण पूछा.

"प्रिय, मैं समझा नहीं सकती," सावित्री ने कहा. "लेकिन मैं अगले चार दिनों और रातों के लिए यहीं पर रहूँगी."

सत्यवान ने उससे विनती की, "सावित्री, मैं तुम्हारी बात समझ नहीं पाया. पर मैं चाहता हूँ कि तुम घर चलो."

"नहीं," सावित्री ने कहा, "कुछ ज़रूरी काम है जो मुझे करना ही होगा."

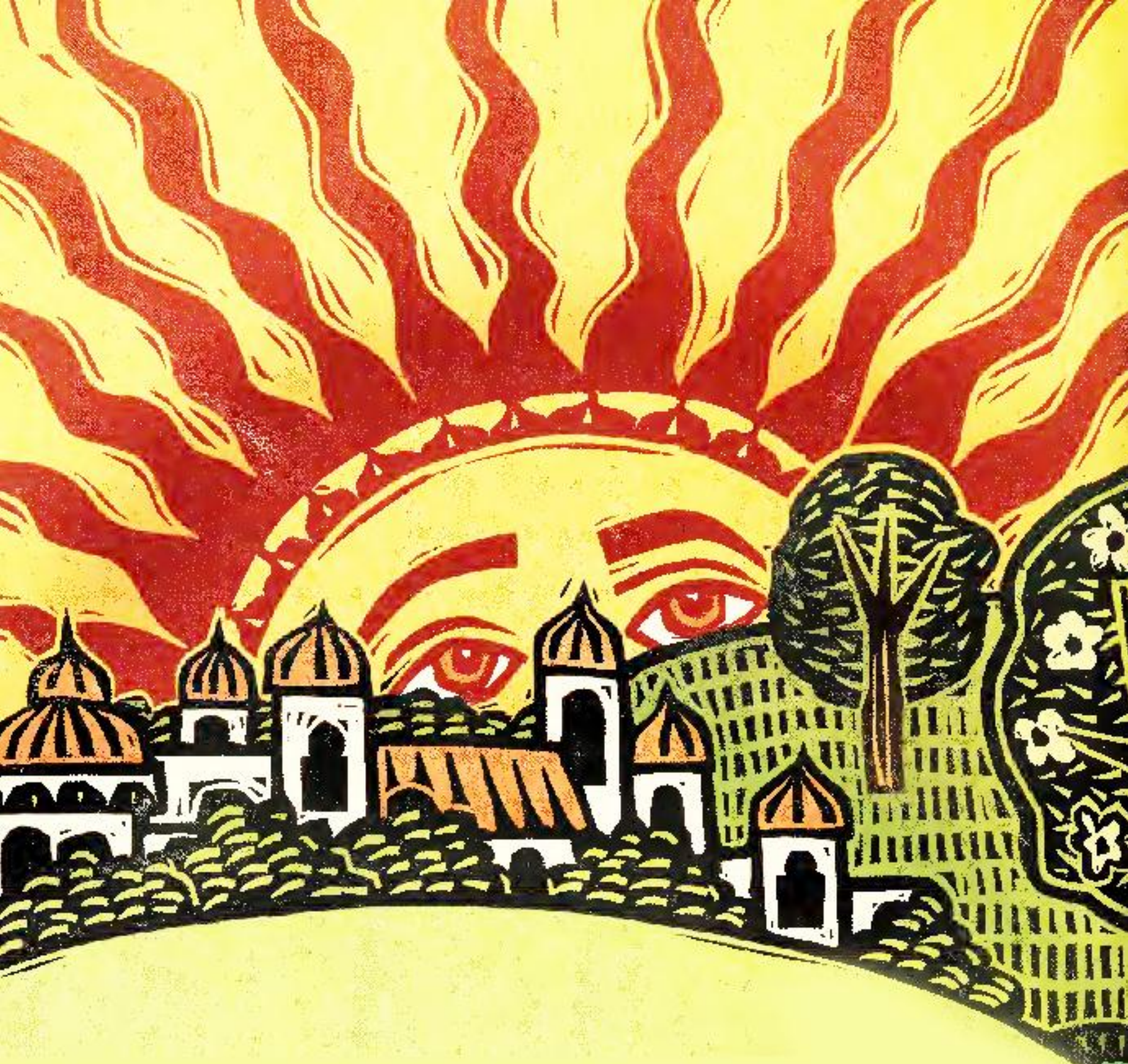

घंटों तक सावित्री प्रार्थना करती रही. उसने देवताओं से कुछ चमत्कार करने की प्रार्थना की. जल्द ही चार दिन बीत गए और अंतिम दिन का सूर्य उदय हुआ.

सत्यवान को इस बात का कोई अंदाज़ नहीं था कि यह पृथ्वी पर यह उसका आखिरी दिन था. सत्यवान ने सावित्री से दुबारा विनती की. "मेरी प्यारी पत्नी, तुमने कई दिनों से कोई आराम या भोजन नहीं किया है. चलो, तुम घर चलकर आराम करो. मैं तुम्हारे लिए कुछ फल इकट्ठा करके लाता हूँ."

सावित्री वे आखिरी घंटे अपने पति के साथ बिताना चाहती थी. इसलिए सावित्री ने सुझाव दिया कि वो दोनों मिलकर फल इकट्ठे करें.

थोड़ी देर बाद वे रुके ताकि, सत्यवान जलाऊ लकड़ी काट सके. सावित्री ने आराम किया और सत्यवान के लकड़ी काटते समय उसने दुबारा प्रार्थना की.

अचानक सत्यवान उसकी ओर मुड़ा और उसने कहा, "प्रिय, मैं तुम्हें मुश्किल से देख पा रहा हूं. मेरा सिर बुरी तरह से दर्द कर रहा है. अब मुझे आराम करना चाहिए."

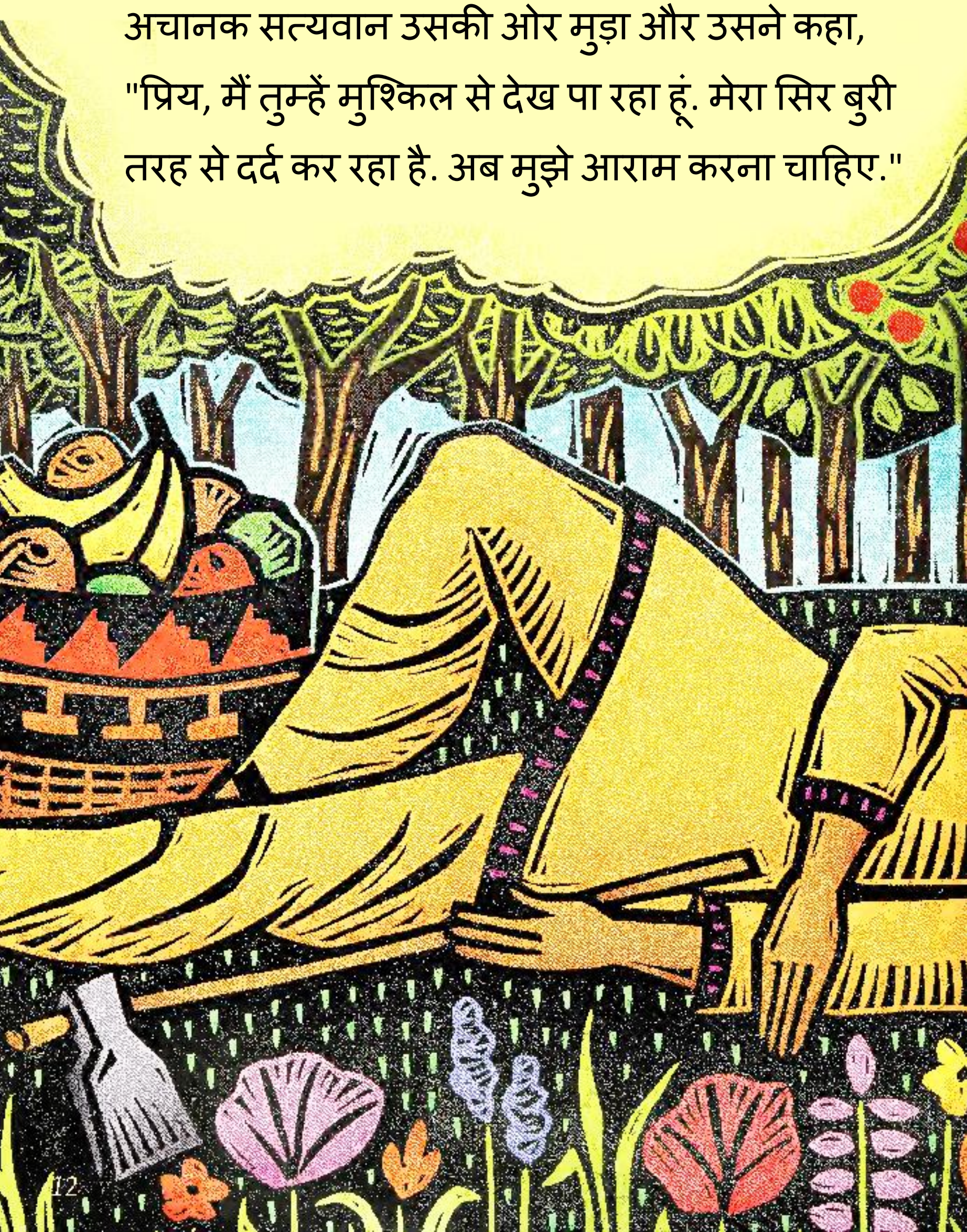

फिर सत्यवान गहरी नींद में सो गया. सावित्री ने उसका सिर अपनी गोद में रख लिया और उसका माथा सहलाने लगी. उसे दिल में सत्यवान की मृत्यु का डर था.

कुछ क्षणों बाद, सावित्री ने एक डरावनी आकृति को उपर से नीचे आते हुए देखा. उसने सत्यवान के सिर को जमीन पर टिका दिया और वो खुद खड़ी हो गई.

"आप कौन हैं? आप इस दुनिया के तो बिलकुल नहीं हैं?" सावित्री ने पूछा.

"मैं यम हूं - मृतकों का देवता," उस आकृति के कहा.

"मैं तुम्हारे पति को ले जाने के लिए आया हूँ."

सावित्री ने देखा कि उसका प्रेमी अपनी अंतिम सांसें ले रहा था. जैसे ही यम, सत्यवान की आत्मा के साथ जाने के लिए निकले, सावित्री उनका रास्ता रोक कर खड़ी हो गई.

"तुम मेरे सामने से हटो!" यम ने दहाड़कर कहा.

"तुम घर जाओ. अब उसकी जीवन लीला समाप्त हो गई है!"

"मैं घर वापिस नहीं जाऊंगी. मैं उसका पीछा करूंगा- और आपका भी. आप जहां भी जाएंगे, मैं पीछे-पीछे आऊंगी."

यम ने सावित्री को चार दिनों तक प्रार्थना करते हुए देखा था.
सत्यवान के प्रति वो सावित्री के समर्पण से अवगत थे.
अंत में यम ने कहा, "मैं सत्यवान का जीवन तो वापस नहीं दे सकता हूँ, लेकिन सावित्री मैं तुम्हारी एक इच्छा ज़रूर पूरी कर सकता हूं. बताओ, तुम क्या चाहती हो?"

"देखिए, सत्यवान के पिता अंधे हैं. क्या आप उनकी दृष्टि को बहाल कर सकते हैं?" सावित्री ने पूछा.

"चलो तुम्हारी इच्छा पूरी हुई. अब तुम मेरे सामने से हटो," यम ने कहा. लेकिन सावित्री बेखौफ होकर रास्ते में खड़ी रही.

यम ने आह भरी. "चलो ठीक है. एक चीज़ और मांग लो. उसके बाद तुम्हें हटना ही होगा."

"सत्यवान के पिता को वर्षों पहले उनके राज्य से निष्कासित किया गया था. कृपा उन्हें उनका साम्राज्य वापस दिलवाएं."

यम ने कहा, "तुम्हारी दूसरी इच्छा भी पूरी हुई. अब मेरे सामने से हटो."

पर सावित्री अपने स्थान से बिलकुल नहीं हिली, हालांकि वो थककर चूर-चूर हो गई थी.

"ठीक है तुम अब तीसरी इच्छा मांगो. फिर मुझे मेरा काम करने के लिए छोड़ दो," यम ने कहा.

"मेरे पिता का कोई पुत्र नहीं है. कृपा उन्हें एक पुत्र दें," सावित्री ने कहा.

एक बार फिर यम ने सावित्री की इच्छा पूरी की. पर फिर भी सावित्री वहां से नहीं हटी, भले ही वो बेहद थकी थी.

यम उसकी दृढ़ता से काफी नाराज थे. लेकिन वे सावित्री की हिम्मत और ताकत के प्रशंसक भी थे.

"ठीक है, एक चौथी इच्छा मांगो," यम ने कहा.

"मुझे एक बेटा चाहिए," सावित्री ने निवेदन किया.

"चलो, तुम्हारा एक बेटा ज़रूर होगा," और उसके बाद यम ने सावित्री को एक ओर धकेला और फिर अपने रास्ते चल दिए.

सावित्री थक कर रोने लगी. लेकिन उसने यम का पीछा किया. "कृपा," वो भीख माँगती रही, "मेरी बस एक ही और कामना है. बस एक अंतिम इच्छा..... "

यम रुके और उन्होंने सावित्री को घूरकर देखा. "तुम्हारी भक्ति ने मुझे चक्कर में डाल दिया है. चलो, मैं तुम्हारी एक अंतिम इच्छा भी ज़रूर पूरी करूंगा. बताओ, तुम क्या चाहती हो."

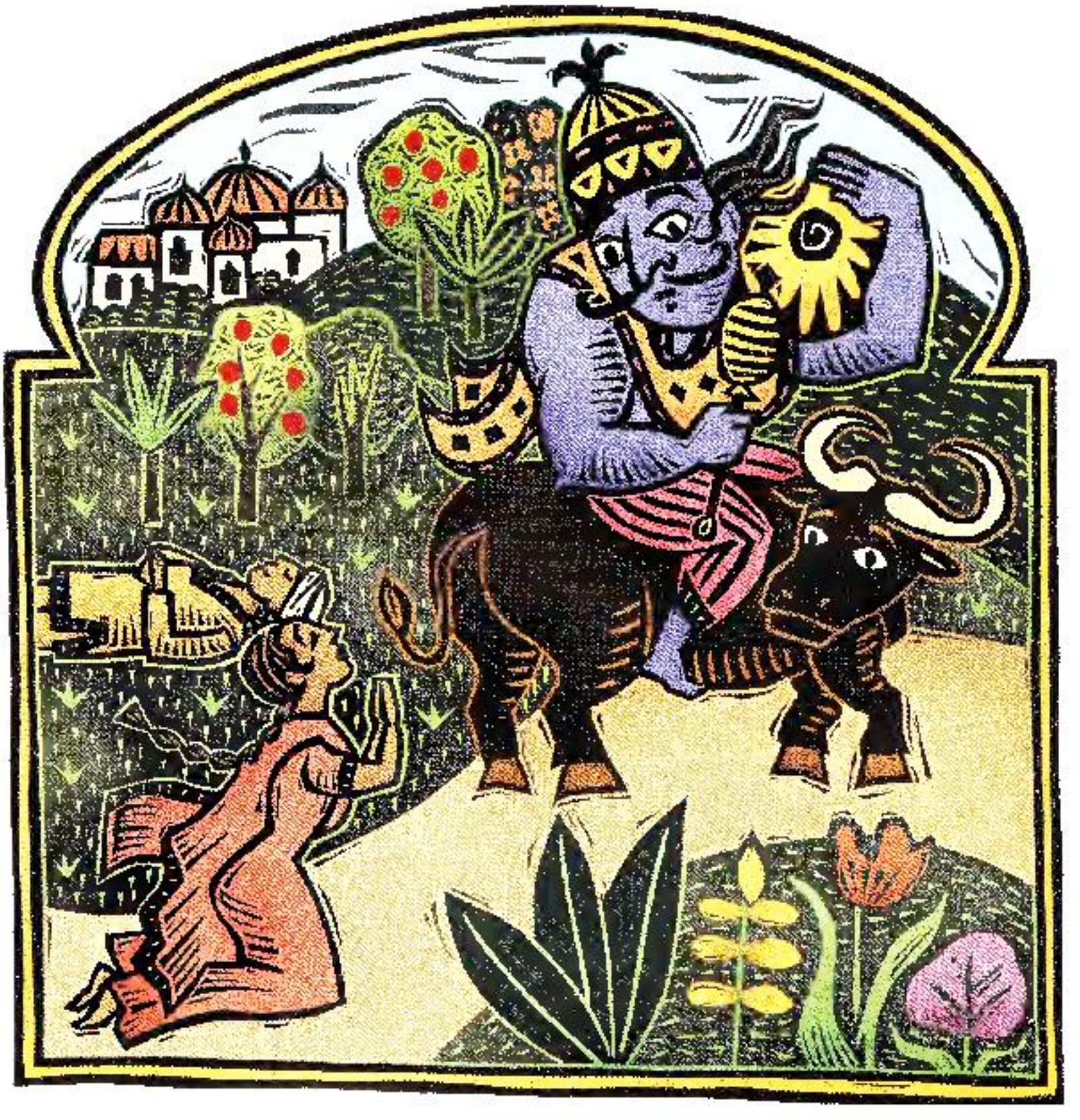

"आप मेरे पति को मुझे वापस कर दें!" सावित्री रोई.

"तुम कभी हार नहीं मानोगी?" और यह कहकर यम वहां से गायब हो गए.

सावित्री वापस अपने पति के पास गई. सत्यवान के चेहरे का रंग वापिस लौट आया था और अब धीरे-धीरे उसकी आँखें खुल रही थीं.

"क्या हुआ? क्या मैं सो गया था?" सत्यवान ने पूछा.

"आप बस आराम कर रहे थे. प्रिय, अब हम घर चलेंगे."

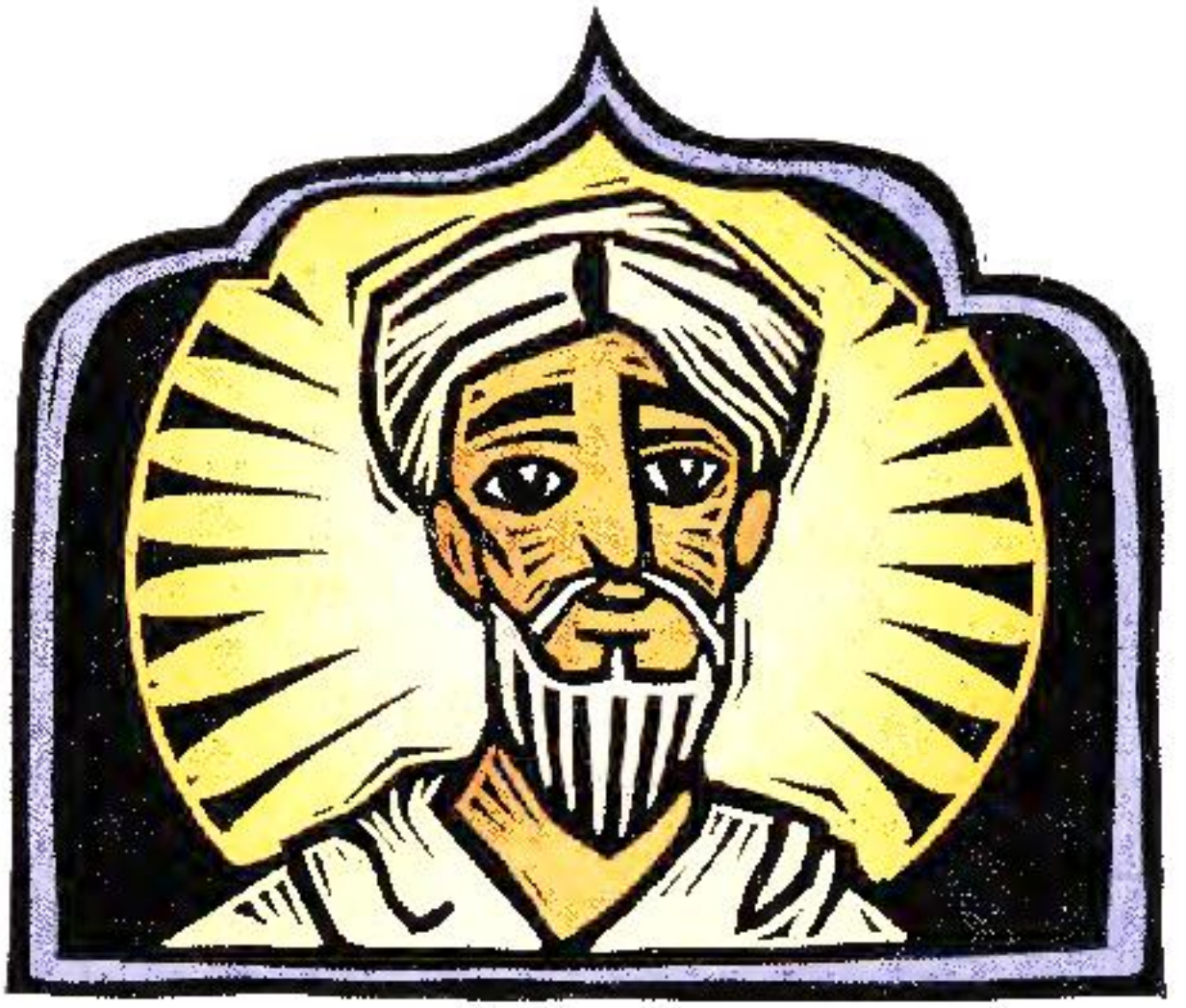

युवा जोड़ा जब अपने घर लौटा तो उन्होंने पाया कि सत्यवान के पिता युमत्सेना की आंखों की रोशनी वापिस लौट आई थी और वो एक बार फिर से देख सकते थे. कुछ समय बाद एक दूत आया, जिसने घोषणा की कि दुष्ट राजा को उखाड़ फेंका गया था. फिर युमत्सेना एक बार फिर राजा बने. कुछ देर में सावित्री ने सब को यह खुशखबरी सुनाई कि वो जल्द ही माँ बनने वाली थी.

"यह सच में एक चमत्कारिक दिन है," युमत्सेना ने कहा.

सावित्री ने अपने पति की ओर देखा और फुसफुसाते हुए कहा, "निश्चित रूप से. अब हमें इस ख़ुशी पर यकीन करना ही होगा."

समाप्त